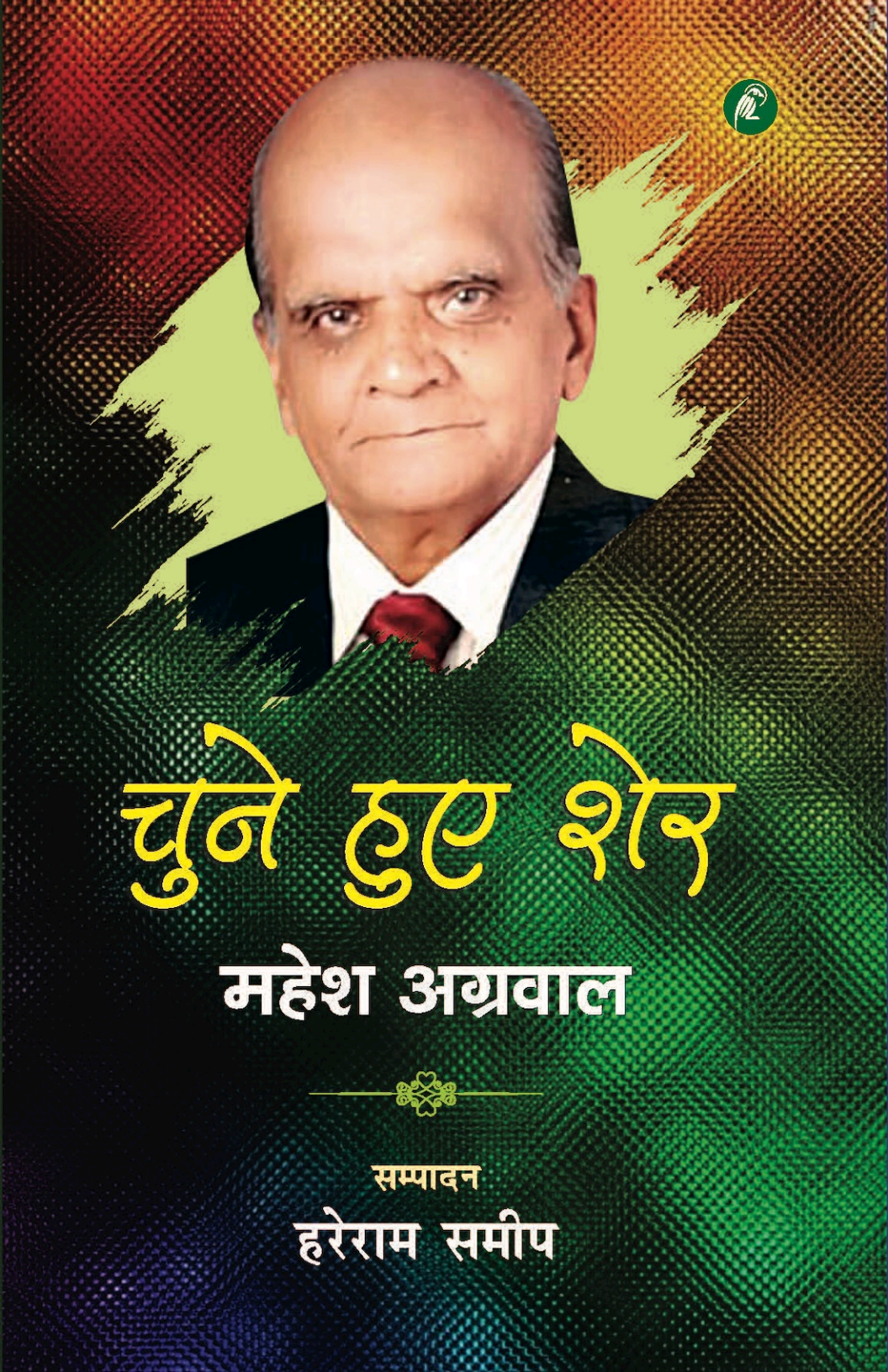

चुने हुए शेर

महेश अग्रवाल

सम्पादन

हरेराम समीप

महेश अग्रवाल

जन्म : 04 अगस्त 1946 भोपाल मध्य प्रदेश

पिता : स्व. राजमल अग्रवाल

शिक्षा : वणिज्य स्नातक

साहित्य की विधा : मूलतः ग़ज़लकार, यदाकदा गीत/नवगीत एवं दोहे भी

प्रकाशन :
1. और कब तक चुप रहें
2. जो कहूंगा सच कहूंगा
3. पेड़ फिर होगा हरा
4. अभी शेष है
   (सभी ग़ज़ल संग्रह)
5. थोड़ा तीखा है
   (ग़ज़ल संग्रह प्रकाशनाधीन)
6. समकालीन ग़ज़ल और महेश अग्रवाल
7. महेश अग्रवाल की प्रतिनिधि ग़ज़लें (6 और 7) सभी का शीघ्र प्रकाशन)

प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशन
1. अनेक ग़ज़ल संकलनों में ग़ज़लें संकलित
2. रंग पर्व और जन संवाद
   (संपादन सहयोग)

सम्मान : मध्य प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल द्वारा नागरिक अभिनंदन सहित अनेक प्रतिष्ठित सम्मान और पुरस्कार

सम्प्रति : भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स भोपाल से 2006 में सेवानिवृत्त

संपर्क सूत्र : 71 लक्ष्मी नगर रायसेन रोड, भोपाल (म.प्र.) 462022

ई मेल : gazalmahesh@gmail.com

मोबाइल : 9229112607 व्हाट्सएप : 9229112607

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस
नई दिल्ली
फ़ोन : 99682-88050, 82879-88726

ISBN 978-93-6306-733-2

₹ 160.00

चुने हुए शेर

महेश अग्रवाल

चुने हुए शेर

महेश अग्रवाल

सम्पादन

हरेराम समीप

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

I.S.B.N # 978-93-6306-733-2
4637/20, शॉप नं.-एफ-5, प्रथम तल, हरि सदन,
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
मो.: 9968288050, 9911866239
ई-मेल: littlebirdinfo21@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2024
© हरेराम समीप

आवरण चित्र : ककसाड़ टीम
मुद्रक : बालाजी प्रिंटर्स, दिल्ली

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए लेखक/प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

सम्पर्ण

जिन्दगी के उस हौसले को जिसने संघर्ष की भट्टी
में झौंक कर भी निर्भीकता से अपने वैचारिक धरातल
की सुदृढ़ता को कायम रखा...

एक जनधर्मी ग़ज़लकार के अर्थवान शेरों का संग्रह

हिन्दी कविता के विविध काव्य-रूपों में आज ग़ज़ल सर्वाधिक लोकप्रिय काव्य-रूप है, जो अपने समय, समाज और संस्कृति की अभिव्यक्ति बड़ी संजीदगी, सम्पूर्ण ज़िम्मेदारी और ईमानदारी से कर रही है। तेरहवीं शताब्दी में फ़ारसी मूल की इस विधा, ग़ज़ल के बाहरी और भीतरी सौंदर्य ने भारतीय भाषाओं के अनेकानेक कवियों को सृजन के लिए आकर्षित किया है।

हिन्दी में आई यह ग़ज़ल आज की पीढ़ी के ग़ज़लकारों की लोकप्रिय आवाज़ है, जिसमें उनके जीवन का अनुभूति-सत्य सार्थकता के साथ व्यक्त हो रहा है। आज की हिन्दी ग़ज़ल की यह विशेषता है कि वह समकालीन प्रश्नों से जूझ रही है। वह बदलती दुनिया में आ रही विसंगतियों और जीवन-मूल्यों के ह्रास को लेकर बेहद चिंतित है। वह अपनी जड़ों को कटने न देने के लिए भी प्रतिबद्ध है। आधुनिकीकरण और भूमंडलीकरण के त्रासद प्रभावों और दुष्परिणामों से उपजे विमर्श को अपने शब्द देते हुए आज के ग़ज़लकार जीवन के श्रेष्ठतम मूल्यों का समर्थन कर रहे हैं, जो आमजन को आत्मीय और अपने दिल की बात लगती है।

आज ऐसे अनेक ग़ज़लकार हैं, जिन्होंने हिन्दी ग़ज़ल को नया स्वरूप और दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महेश अग्रवाल उनमें एक उल्लेखनीय नाम है, जिन्होंने दुष्यंत की प्रतिरोध की परम्परा को सफलतापूर्वक विकसित किया है। वास्तव में हिन्दी कविता में 'प्रतिरोध' की एक लम्बी परम्परा रही है। कविता में प्रतिरोध सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक असमानता के प्रतिउत्तर में उपजता है। महेश हिन्दी ग़ज़ल की इसी मूलधारा के प्रतिनिधि ग़ज़लकार हैं, जो ग़ज़ल को सामाजिक सरोकारों की अभिव्यक्ति का माध्यम मानते आ रहे हैं। उनके अब तक चार ग़ज़ल-संग्रह–'और कब तक चुप रहें', 'जो कहूंगा सच कहूंगा', 'पेड़ फिर होगा हरा' और